सेवाग्राम-साबरमती संदेश यात्रा

17-24 अक्तूबर 2021

मैं साबरमती आश्रम बोल रहा हूँ ...

मैं, भारत में महात्मा गांधीजी का पहला आश्रम, साबरमती आश्रम बोल रहा हूँ। गुजरात के अहमदाबाद में, साबरमती नदी के किनारे 1917 महात्मा गांधी ने मुझे तब बनाया गया जब वे दक्षिण अफ्रीका से लौट कर भारत मे अपना ठिकाना खोज रहे थे। साबरमती नदी के किनारे, ऐसी जगह खोजी उन्होंने कि जिसकी एक तरफ साबरमती जेल है और दूसरी तरफ श्मशान घाट! महात्माजी ने मुझे समझाया था : गुलाम देश में एक सत्याग्रही का दो ही ठिकाना होना चाहिए : सत्याग्रह करते हुए जेल जाना; या लड़ते हुए अपना बलिदान देना!

इतना ही नहीं, महात्माजी ने मुझे जन्म के साथ ही कुछ दूसरी बातें भी सिखाई-पढ़ाई थी। उन्होंने जो सब बातें मुझे सिखाई थी वह मै आज भी भूला नहीं हूँ; और उनमेंसे कुछ बातें थी कि सादगी से रहना, सच बोलना और सत्ता से नहीं डरना हर सच्चे इन्सान का धर्म है ! 1930 में, जब गांधीजी मुझे छोड़ कर हमेशा के लिए दांडी यात्रा पर निकल गए तब भी वे इन्हीं मूल्यों की रक्षा के लिए निकले थे, और जाते-जाते मुझसे कह गए थे कि इन मूल्यों को न भूलना, न देश को भूलने देना!

मैं आज आपसे बोल रहा हूँ तो इसलिए कि महात्माजी के सिखलाए इन मूल्यों पर संकट के बादल मंडरा रहे है ! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे देश की आत्मा कुचली जा रही है। महात्माजी का नाम लेते हुए, देश को महात्माजी से अलग व उल्टी दिशा में ले जाया जा रहा है। मैं देश की ऐसी बदहाली का मूक दर्शक बना नहीं रहा सकता। इसलिए आपसे कहने आया हूँ कि भाइयों, मेरे साथ आंखें खोल कर देखो, और मेरी आवाज में आवाज मिलाकर बोलो !

सरकार मुझे नया, बड़ा और आधुनिक परिवेश में सजाना चाहती है। वह मेरी साज-संवार पर 1200 करोड़ रुपये, शायद उससे कहीं ज्यादा भी, खर्च करना

चाहती है, ताकि संसार की आलीशान इमारतों में मेरी भी गिनती हो; मुझे देखने और मौज-मजा कर अपनी थकान उतारने लाखों लोग यहाँ आएं। लाखों लोग आयेंगे तो करोडों की कमाई भी होगी और संसारभरमें नया बनाने वालों कि शायद वाह-वाह भी होंगी !

महात्माजी ने मुझे सीखलाया था कि ऐसा समाज जीवन बनाया जाए जिसमें देश के करोडों-करोड़ किसान-मजदूर; छोटा धंधा-पानी करनेवाले; छोटी आमदनी से अपना घर-परिवार चलानेवाले; नौकरी-पेशा करने वाले ~~सभी~~ इज्जत से जी सकते हैं और ईमान की रोटी खा सकते हैं; जब जीवन में सादगी होंगी, जब सच बोलनेका स्वाभाविक मन करें, और जब लोग सत्ता की सनक का हींमत से प्रतिवाद करते हों। इसलिए तो महात्माजी ने मुझे ऐसी सादगी से, ऐसी शांत जगह पर बनाया और यहीं से देश की आजादी की पुकार लगाई। देश ने मेरी सादगी मे शान देखी, मेरी शांति में शक्ति का अनुभव किया और मेरी पुकार सुनकर आजादी की वेदी पर अपना बलिदान दिया। मैं गूंगा-बेजान आश्रम नहीं, आजादी का बलिदानी सिपाही बन गया। महात्माजी ने मुझे सिखाया : आजादी का मतलब है कि इस देश का आम आदमी जैसे रहता है वैसे सब लोग रहें; एक अच्छा व सच्चे इन्सान जैसा होना चाहिए, वैसा बननेकी हम सब कोशिश करें । वे खुद ऐसे ही थे, और हमें ऐसा ही बनाना चाहते थे।

अब यह सरकार मुझ पर फैशन लाद रही है । मैं आप सबसे ये कहनें आया हूँ कि मुझे बोलनेसे रोका जा रहा है । मैं बोलना चाहता हूँ सादगी की बोली, मैं बताना चाहता हूँ सचाई और समानता का बापूजी का रास्ता। लेकिन मेरी आवाज को 1200 करोड़ रपयों की चमक-दमक में दबाया जा रहा है। मैं चाहता हु हूँ कि मेरा दरवाजा वैसे हि खुला रहे जैसे महात्माजी ने उसे खोल रखा था। देश के हर कोनेसे, हर तरह के लोग बे-रोक-टोक यहां आयें, यहां की शांति, सादगी, पवित्रता व आदर्श जीवन-शैली की पहचान लेकर जायें । मैं जानता हूँ कि हम सब महात्मा गांधीजी भले न बन सकें लेकिन मैं चाहता हूँ कि सारे हिन्दुस्तानी व सारी दुनिया के लोग मेरे पास जब भी आयें तब यह तो जान ही सकें कि महात्माजी कैसे थे, कैसे रहते थे और कैसे रहने से हिंदुस्तान का व संसार का भला हो सकता है । मुझे बापूजी ने जैसा बनाया वैसा बननेसे ही देश जहरीली हवा व पानी से, गैर-बराबरी

के हिंसक समाज से, युद्धों से लहू-लुहान व आतंकवाद से क्षत-विक्षत संसार से मुक्त हो सकता है।

मैं आपसे कहने आया हूँ कि हमें आपस में लड़ाने वाला, एक-दूसरे से डराने वाला, भय, लालच व क्रूरता को हथियार बना कर हमें कुचलने वाला यह विकास दरअसल विकास के नाम और परिवेश में प्रच्छन्न विनाश ही है। सरकार मेरी यह आवाज बंद करना चाहती है और इसलिए वह मुझे वैभव के पर्दे में छिपा देना चाहती है। वह चाहती है कि महात्माजी जैसे थे, उस रूप में हम उन्हें न देख सकें, न पहचान सकें। वह हमारे सामने उनकी कल्पना के गांधी पेश करना चाहती है जो दूसरा कुछ भी हो, हमारा गांधी नहीं हो सकता है। मैं आपसे कहने आया हूँ कि हमने महात्मा के शरीर की हत्या की, उनके विचारों की हत्या की, और अब उनकी स्मृतियों और आदर्शों की भी हत्या करना चाहतें हैं। मै इसके खिलाफ अपनी आक्रोशभरी व्यथित आवाज लगाने आपके पास आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप सब जहाँ भी हो वहीं से बोलें कि महात्माजी की स्मृतियों और आदर्शों से कोई भी खेलें, यह हमें कतईं मंजूर नहीं है! हम सबका गांधी जैसा था वैसा ही विश्व के लोगों के पास रहनें दो! गांधी रहेंगे तो आशा रहेगी कि हम गिर कर भी उठेंगें, मर कर भी जी सकेंगें, अपना देश नया बना सकेंगें।

आइए, हम एक आवाज में कहें : गांधी-विचार के जितना पास आ सकते हो इतनी कोशिश निष्ठासे करें, लेकिन गांधीजी के स्मृति-स्थानों से हर हालमें दूर ही रहो! आप सब मेरी आवाज में आवाज मिला कर भारत सरकार से अनुरोध कीजिए कि मैं जैसा हूँ, मुझे वैसा ही रहनें दें। यह जागरण-यात्रा मुझे भी, आपको भी, और सत्ता को भी जगा सकें ऐसी मजबूत बनें।

सत्य सुनना व सत्य पर चलना, हम सबकी जरुरत है। अगर हमारी आक्रोशभरी आवाज अगर भारत सरकारके कानों पर नहीं पड़ती, तो चलो हम सब महात्माजीके सत्याग्रहके के रास्ते पर चलें।

मेरे साथ गांधी स्मारक निधि, गांधी शांति प्रतिष्ठान, सर्व सेवा संघ, सेवा ग्राम आश्रम प्रतिष्ठान, सर्वोदय समाज, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई तालीम समिति, राष्ट्रीय युवा संगठन, महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल, राष्ट्रीय जल बिरादरी,

गुजरात के गांधीजन, और विश्वके जाग्रत जन सभी खड़ें हैं । 17 अक्तूबर से सेवाग्राम आश्रम में सर्वधर्म प्रार्थना एवं संकल्प के साथ मेरी यह यात्रा शुरु हुई है। मैं आज आपके पास पहुँचा हूँ । यहाँ से अकोला, फिर नंदूरा, फिर एदलाबाद, फिर फैजपुर, खिरोदा, अमलनेर, धुले, नंदुरबार, बारडोली, सूरत होते हुए अहमदाबाद पहुँचूँगा। 24 अक्तूबर को अहमदाबाद की परिक्रमा करते हुए मैं अपने स्थान साबरमती पहुँच जाऊँगा । वहां आप सबके साथ सर्वधर्म प्रार्थना होगी, सरकार को सद्‌बुद्धि मिले, ऐसी कामना के साथ गोष्ठी, जन संवाद एवं जन संपर्क का कार्यक्रम होगा । जब मैं यात्रा पर निकला हूँ, तब आप हमें अपना साथ कैसे देंगें ? यात्रा में होनेवाले खर्च के लिए मदद कीजिए, यात्रा का संदेश, मेरी यह बात अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाईए और आपमें से जो भी आ सकें, 24 अक्तूबर को अहमदाबाद आइए । मुझे आप सबके साथ से शक्ति मिलेगी ।

सेवाग्राम-साबरमती यात्रा संयोजन समिति

सेवाग्राम आश्रम, सेवाग्राम वर्धा (महाराष्ट्र)

मो. 9650378349, 9437218717, 9351314400

9422252791, 9422288833, 9692667007